एन्सकेडे (हॉलैंड)
जून २६, २०००

सन्देश संख्या २५

आपके जीवन्त देह के अन्दर क्या है – इसको समझें

आपके जीवन्त देह के अन्दर क्या है – इसे समझें। आपके हृदय में स्थित अंगुष्ठ मात्र आकाश उतना ही पूर्ण है जितना कि बाह्य आकाश। ऊर्जा एवं प्रज्ञा, अग्नि एवं वायु, स्वर्ग एवं पृथ्वी, सूर्य एवं चन्द्र, मेघ का गरजना एवं चमकना, सभी तारे और सब कुछ ..... इसमें समाहित हैं।

आपको यह सामान्य तथ्य क्यों नहीं उद्वेलित करता कि अहम् द्वारा सृजित एकाग्रता की जटिल तकनीक तथा उससे उत्पन्न मन की समस्त उत्तेजना शरीर पर मन के गलाघोंटू पकड़ को ही मजबूत करेगी, जिसे हम जीवन मान बैठे हैं। इस प्रकार यह हमारे जीवन में चिरस्थायी शान्ति एवं पवित्रता के अवतरण को पुनः विलम्बित कर देती है।

इस शरीर में वह ''पवित्रता'' है, जिसे मन के सम्पूर्ण मायाजाल एवं कपोल कल्पनाओं के द्वारा प्रक्षेपित या निरूपित नहीं किया जा सकता है। न तो विचार अपनी सुविधानुसार इनका उपयोग कर सकते हैं और न ही आध्यात्मिक मण्डी में इसे खरीदा या बेचा जा सकता है। अहम् अपने किसी भी छद्म वेश में न तो इसका स्वामी बन सकता है और न ही इसे दूसरों को बाँट सकता है।

पूर्णत्व है, अवश्य है, जो किसी भी प्रतीक या शब्द की सीमा से इतना परे है कि वे इसका स्पर्श भी नहीं पा सकते। वह अकथनीय एवम् असम्प्रेषणीय होते हुए भी एक तथ्य है।

इस अगाध एवं पवित्र पूर्णत्व की उपासना नहीं की जा सकती है। आप इसका ध्यान भी नहीं कर सकते। इसका कोई विलोम नहीं है। इसके अवतरण के लिए क्या आप अपना विलय कर सकते हैं?

क्रियायोग का अभिप्राय भविष्य में कुछ प्राप्त करना नहीं है। इसका विस्ङ्गोट यहीं और अभी संभव है। चित्तवृत्ति का व्यापार बन्द होना चाहिए तभी उस मौलिक मुक्ति का उद्भव होगा। तदुपरान्त सच्चिदानन्द का प्रत्यक्ष बोध अवश्यंभावी है।

वह पूर्णत्व न सिङ्र्ग इस कक्ष में विद्यमान है बल्कि इस सीमावर्ती नगर के उपवनों एवं मार्गों को अधिप्लावित करता हुआ हॉलैंड और जर्मनी को विभाजित करनेवाली सरिता के जल से भी परे सम्पूर्ण धरा एवं ब्रह्माण्ड को आच्छादित कर रहा है।

जय शिव शंकर।
बम बम हर हर।
हर हर हर हर।
बम बम हर हर।